उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल)

इण्टरमीडिएट परीक्षा "अ"
(उत्तराखण्ड) 12 पन्ने

केन्द्र संख्या की मुहर	केन्द्र

नोट–केन्द्र के नाम की मुहर उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग पर न लगाएं।

नोट–परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका के किसी भी भाग में अपना नाम व केन्द्र का नाम न लिखें।

'ब' उत्तर पुस्तिका की संख्या–	$ब_1$	$ब_2$	$ब_3$	$ब_4$
हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–	B1	B2		

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायेगा–

अनुक्रमांक (अंकों में)–

अनुक्रमांक (शब्दों में)–

विषय–

प्रश्नपत्र संकेतांक–

परीक्षा का दिन–

परीक्षा तिथि–

कक्ष निरीक्षक द्वारा भरा जाय–

केन्द्र संख्या–

परीक्षा कक्ष संख्या–

उपरोक्त सभी प्रविष्टियों की जाँच मेरे द्वारा सावधानीपूर्वक कर ली गयी है।

कक्ष निरीक्षक का नाम–

दिनांक–

हस्ताक्षर कक्ष निरीक्षक–

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने इस उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन समुचित प्रश्न–पत्र संकेतांक तथा मूल्यांकन निर्देशों के अनुसार किया है। प्राप्तांकों का मुखपृष्ठ पर अग्रसारण कर प्राप्तांकों एवं प्राप्तांकों के योग का मिलान कर लिया गया है। एवार्ड ब्लैंक में प्राप्तांकों की अंकना कर उनका पुनः मिलान भी कर लिया है। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं उत्तरदायी रहूँगा/रहूँगी।

परीक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या।

1. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

2. अंकेक्षक के हस्ताक्षर एवं संख्या.....

सन्निरीक्षा प्रयोगार्थ

सन्निरीक्षा पूर्व अंक–

सन्निरीक्षा पश्चात् अंक–

त्रुटि का प्रकार–

दिनांक–

हस्ताक्षर निरीक्षक–

परीक्षक, निम्न तालिका में प्रत्येक प्रश्न तथा उसके खण्डों के प्राप्तांकों का विवरण यथास्थान भरें।

प्रश्न संख्या	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	योग
01											
02											
03											
04											
05											
06											
07											
08											
09											
10											
11											
12											
13											
14											
15											
16											
17											
18											
19											
20											
21											
22											
23											
24											
25											
26											
27											
28											
29											
30											
31											
32											
33											
34											
35											

योग (शब्दों में)– .....योग (अंकों में)

प्राचीन भारत

उत्तर संख्या-01

हड़प्पाई लिपि:-

चित्रात्मक:- हड़प्पाई लिपि चित्रात्मक लिपि है।

दाएँ से बाएँ:- दाएँ से बाएँ ओर लिखी गई

चिह्नों की संख्या:- 375 से 400 चिह्न

सर्वप्रथम खोज:- 1853 ई० में।

लिपि के कुछ चिह्न

भावात्मक लिपि:- हड़प्पाई लिपि भावात्मक लिपि है।

रहस्यमय लिपि:- हड़प्पाई लिपि अभी तक रहस्यमयी बनी हुई है।

उत्तर संख्या-02

अभिलेख:- पत्थर, धातु अथवा मिट्टी के बर्तन, जैसी कठोर सतह पर उत्कीर्ण लेख को अभिलेख कहते है।
इससे राजा, राज्य की सीमाएँ तथा लिखवाने वाला का वर्णन होता है।

अभिलेख

- **शिलालेख** → पत्थर की शिलाओं पर उत्कीर्ण लेख
- **गुफालेख** → गुफाओं में उत्कीर्ण लेख
- **स्तम्भ लेख** → स्तम्भ में उत्कीर्ण लेख

उत्तर संख्या-03

जैन धर्म - संस्थापक - महावीर स्वामी

जैन धर्म

- **श्वेताम्बर** → श्वेत वस्त्र धारण करने वाले
- **दिगम्बर** → नग्न रहते है

जैन धर्म अहिंसा सिद्धान्त:-

जैन धर्म अहिंसा पर बल देता है। इसलिए वे ~~अ~~ हमेशा मुँह पर श्वेत वस्त्र बाँधे रहते है। जिससे उनके बोलने से किसी जीव की मृत्यु न हो।

उत्तर संख्या- 01

हड़प्पा सभ्यता

खोज:- 1921 ई० में

खोजकर्ता:- दयाराम साहनी

वर्तमान स्थिति:- पाकिस्तान

विशेषता:- नगर-नियोजन तथा जल निकासप्रण

मैके के अनुसार:- "यह दुनिया की खोजी गई सबसे विशिष्ट सभ्यता है। ऐसी सभ्यता आज तक न खोजी गई न खोजी जाएगी।"

हड़प्पाई जल निकास प्रणाली

यह बात सत्य है कि हड़प्पाई जल निकास प्रणाली नगर नियोजन की ओर संकेत करती है। इसका वर्णन निम्नानुसार है:-

1- प्रत्येक घर में नालियों की व्यवस्था

हड़प्पाई सभ्यता का एक भी घर ऐसा न था जहाँ से जल निकास प्रणाली के साक्ष्य न मिले हो।

2- नालियाँ पक्की ईंटों से निर्मित:-

प्रत्येक घर में पक्की ईंटों से निर्मित नालिया थी। यह इस बात की ओर संकेत करती है कि हड़प्पाई समाज ईंटों से परिचित था।

3- सड़क के दोनों ओर नालियाँ:-

सड़क के दोनो ओर नालियो की समुचित व्यवस्था थी। जिससे बरसात मे वर्षा का जल सड़क पर न रुके।

4- ढकी हुई नालियाँ:-

नालियाँ ढकी हुई थी अर्थात सफाई करने के पश्चात इन्हे ऊपर से ढक दिया जाता था।

5- **गन्दे जल के निष्कासन की व्यवस्था:-**
गन्दा जल पहले एक गाढ मे जमा होता था जहाँ से पूरा गन्दा जल शहर से दूर खोला जाता था जिससे समाज तथा शहर मे स्वच्छता बनी रही।

6- **सुरक्षा तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण:-**
स्वास्थ्य तथा सफाई की दृष्टि से नालियो का बहुत महत्व होता है। इसलिए हड़प्पाई समाज मे नालियो के विस्तृत साक्ष्य प्राप्त हुए है।

7. **निष्कर्ष:-**
हड़प्पाई समाज एक उच्च कोटि का समाज था इसकी नगर नियोजन प्रणाली सर्वोच्च थी। जो आधुनिक भारत मे भी नही है।

रोल नं.
Roll No.

प्रश्न संख्या 22 (क) एवं (ख) के लिए
[For Q. No. 22 (a) & (b)]

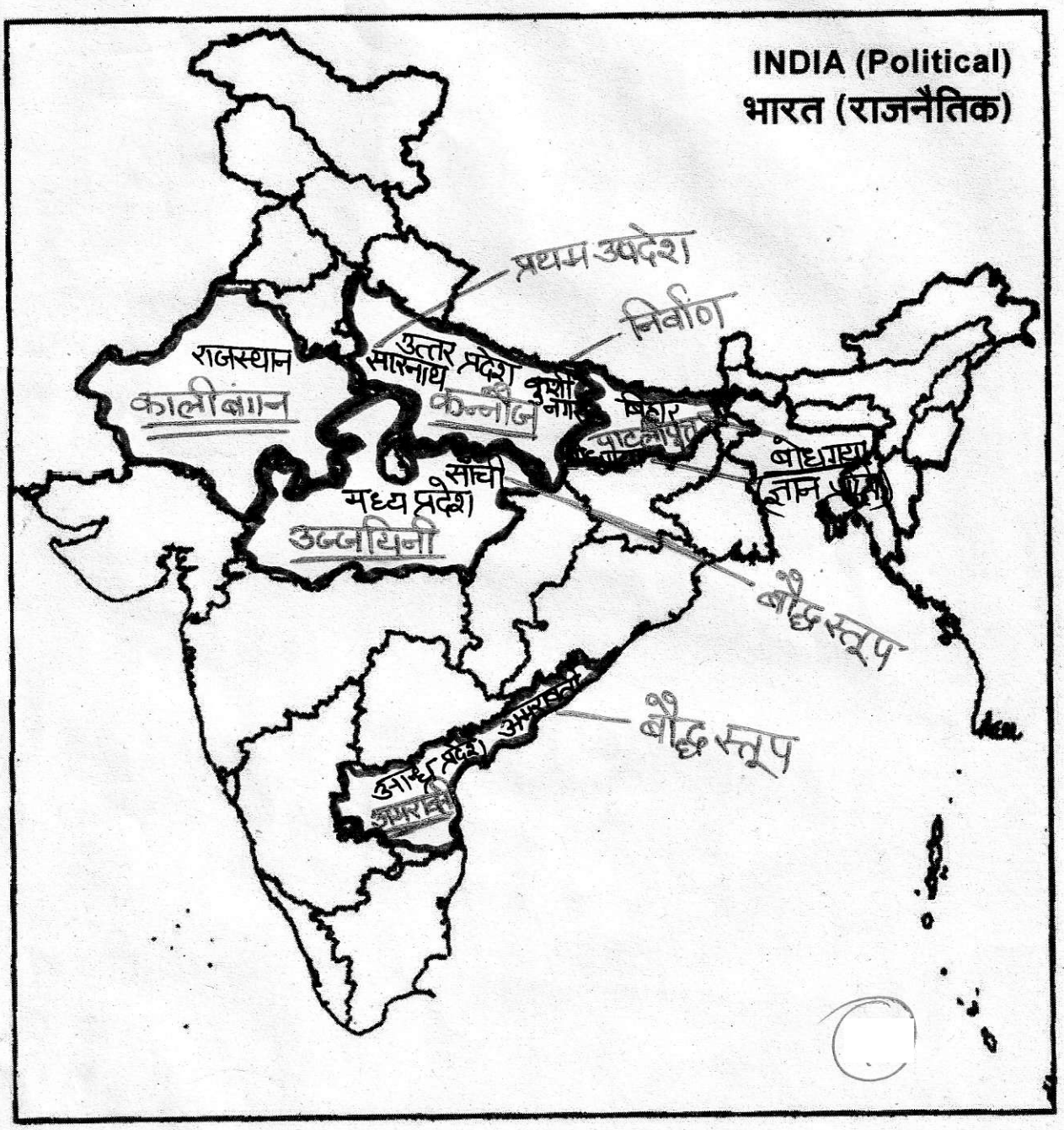

केवल परीक्षकों के लिए (For Examiners Only)	प्रश्न संख्या 22 (Q. No. 22)	क (a)						ख (b)					
		(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	योग Total	(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	योग Total
	प्रदत्त अंक (Marks Provided)												

उत्तर संख्या - 05

मौर्य साम्राज्य

स्थापना:- 321 ई० पू०

संस्थापक:- चन्द्रगुप्त मौर्य

विस्तार:-

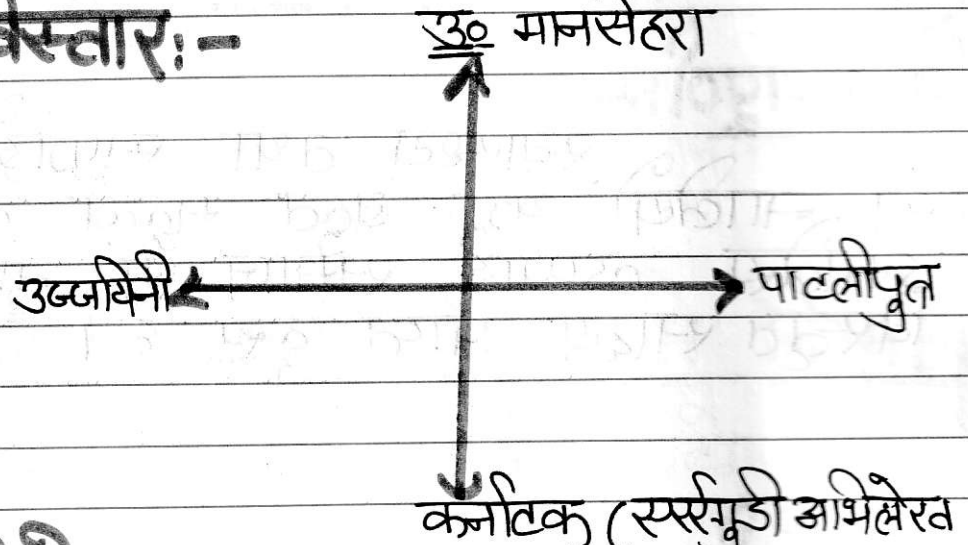

विशेषता:- प्रशासन तथा धर्म

पृष्ठभूमि:- महाजनपद काल में मगध सबसे बड़ा महाजनपद था जिस पर नन्द वंश का शासन था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने नन्द वंश को पराजित कर मगध साम्राज्य का अन्त कर मौर्य वंश की नींव रखी।

स्रोत

- साहित्यिक स्रोत
  - अर्थशास्त्र
  - इण्डिका
  - मुद्राराक्षस
- पुरातात्विक
  - शिलालेख 14
  - पृथालेख 02
  - स्तम्भलेख 05
- विदेशी यात्री
  - मेगस्थनीज

मौर्य कालीन प्रशासन व्यवस्था

- केन्द्रीय प्रशासन
- प्रान्तीय
- नगरीय
- ग्राम
- न्याय व्यवस्था

1- केन्द्रीय प्रशासन :-

राजा सर्वोच्च अधिकारी था। सम्पूर्ण साम्राज्य का रक्षक तथा सम्पूर्ण शक्तियाँ उसमें केन्द्रीत थी।

सप्तांग

- राजा
- मंत्री
- राज्य
- दुर्ग
- दण्ड
- कोष
- मित्र

आत्मात्य :- राजा के बाद आमात्य प्रमुख थे। इनकी संख्या 12 से 20 थी। 8,000 पण वार्षिक वेतन

2. **प्रान्तीय प्रशासन** राज्यपाल प्रान्तों के मुख्य अधिकारी थे।
ये राजा के एजेण्ट के रूप में कार्य करते थे,

प्रान्त
↓
पाँच प्रान्त

- तक्षशिला → उत्तरापथ
- सवर्णगिरी
- उज्जयिनी
- तोसली
- पाटलीपुत्र → राजधानी

3. **नगरीय प्रशासन** नगरों का प्रशासन कई इकाईयों मे विभक्त था।
इसके अन्तर्गत पंचायत व्यवस्था भी थी

4. **सैन्य व्यवस्था:-** मौर्यकालीय सैन्य व्यवस्था छः भागो मे बटी थी,

i) – रथारोही
ii) – अश्वारोही
iii) – हाथी सेना
iv) – पैदल सेना
v) – यातायात सेना।
vi) – नौसेना।

5- **न्याय व्यवस्था:-** मौर्यकालीन न्याय व्यवस्था को दो भागो मे बाँटा गया था।

- धर्मनिष्ठ
- कंटकशोधन

6- **राजस्व:-** राजस्व को चार भागो मे बाँटा गया था।

1/6 भाग तथा 1/4 भाग राजस्व से प्राप्त

7- **निष्कर्ष:-** हड़प्पा सभ्यता के अन्त के बाद द्वितीय शहरीकरण का प्रारम्भ हुआ। तत्कालीन मौर्यसाम्राज आज तक सबसे विशाल साम्राज्य बना है।

उत्तर संख्या - 86

स्तूप

स्तूप का अर्थ:- टीला अथवा ढ़ेर

सर्वप्रथम उल्लेख:- ऋग्वेद में, अग्नि से उठती हुई ज्वालाएँ

प्रसिद्ध स्तूप:- सॉची का स्तूप - M.P
अमरावती का स्तूप - आन्ध्र प्रदेश

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:- स्तूप बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है। महात्मा बुद्ध से सम्बन्धित उनकी वस्तुओं को गाढ़ कर उनके ऊपर स्तूप का निर्माण हुआ।

महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात् उनकी आस्थेयों को आठ भागों में बाँटा गया।

कालान्तर में उन आस्थेयों के ऊपर स्तूप का निर्माण किया गया।

बौद्ध धर्म से सम्बन्धित तथा पवित्र वस्तुएं रखी जाने के कारण सम्पूर्ण स्तूप ही पूजा स्थल बन गया।

आधुनिक समय में स्तूपों पर अलकरण किया जाता है। तथा उन्हे सजाया भी जाता है

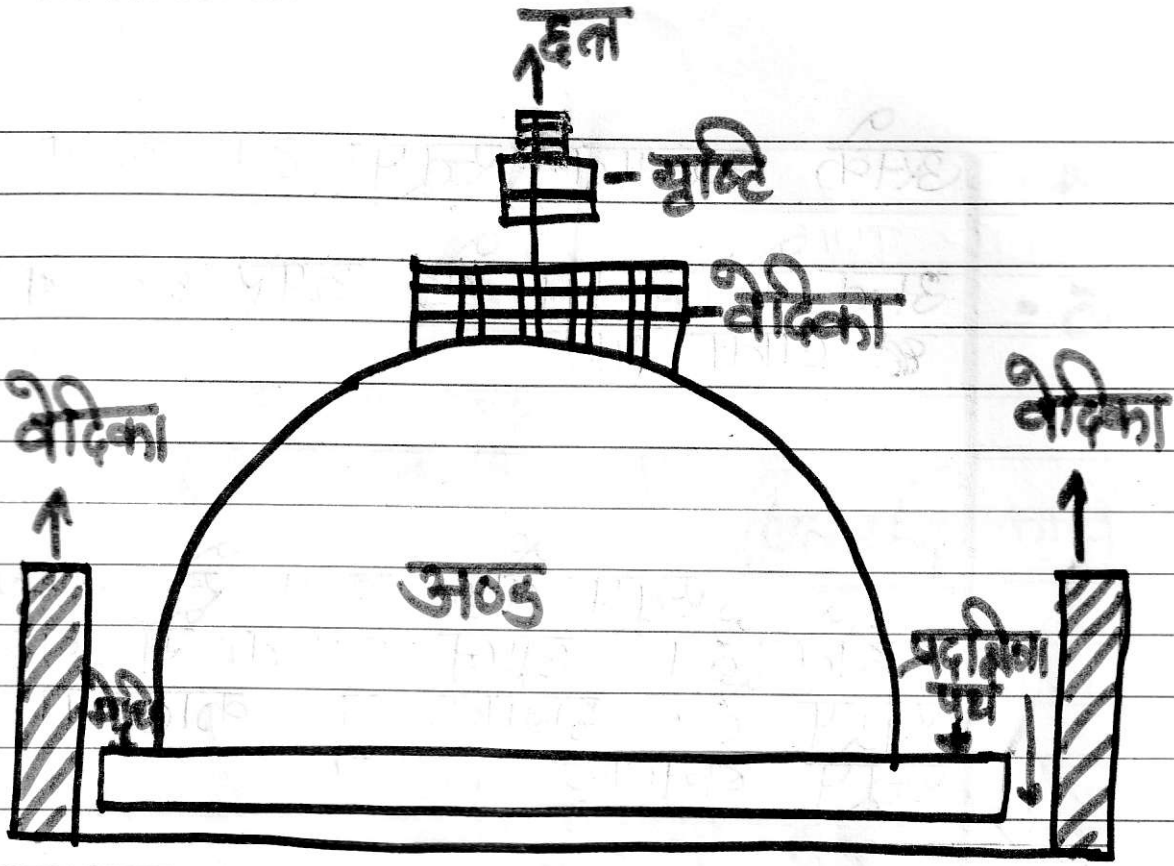

स्तूप का चित्र

स्तूप कैसे बनाएँ चारो ओर:-

उपरोक्त प्रश्नु को उपरोक्त चित्र समझाया जा सकता है।

स्तूप बनाने की प्रक्रिया:-

1- सर्वप्रथम प्रदक्षिणा पथ का निर्माण किया जाता है।

2. तत्पश्चात उसमे वेदिका बनाई जाती है।

3. वेदिका के बीच में अण्ड का निर्माण किया जाता है। जिसमे बुद्ध से सम्बन्धित वस्तुए रखी जाती है

4. उसके पश्चात स्तूप ढक दिया जाता है

5. अन्त में स्तूप के ऊपर छत्र बनाया जाता था।

निष्कर्ष:- स्तूप बौद्ध धर्म से सम्बन्धित होते है। आज भारत में बहुत से स्तूप है, अशोक के काल में 84,000 स्तूप बनवाएँ गए थे

मध्यकालीन भारत

उत्तर संख्या - 07

गुरुनानक

जन्म:- 1469 ई० में

स्थान:- पंजाब के ननकाना जिले में

गुरुनानक सिख धर्म के संस्थापक थे।

उपदेशों का संग्रह:- शबद में

भाषा:- पंजाबी

प्रमुख उपदेश:-

(i)- जाति प्रथा का विरोध किया।
(ii)- पशुबलि की निंदा
(iii)- मानवता पर बल
(iv)- हिन्दू, मुस्लिम, सिख सभी को जोड़ा
(v)- समाज को नयी दिशा देने का कार्य
(vi)- मूर्तिपूजा का विरोध

उत्तर संख्या-08

दक्षिण भारत में स्थापत्य कला के अन्तर्गत अनेक प्रकार की वास्तुकला देखने को मिली।

- गोपुरम
- सभामण्डल
- मण्डप
- ऊँचे मंदिर

गोपुरम:- दक्षिण भारत में मन्दिरों के ऊँचे प्रवेश द्वारों को गोपुरम कहा जाता था। इनकी ऊँचाई बहुत अधिक होती थी। ये राजा की शक्ति का प्रदर्शन करते थे।

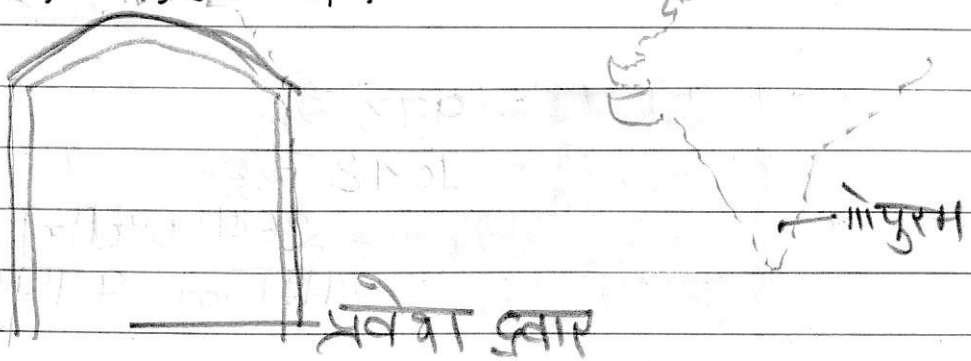

02

उत्तर संख्या -09

झरोखा दर्शन :-

झरोखा दर्शन मुगलों से सम्बन्धित है। मुगल शासक सुबह पूजा करने के पश्चात एक झरोखे से अपनी प्रजा को दर्शन देता था। वह झरोखे में लगभग एक घण्टा व्यतीत करता था।

उद्देश्य :-

(i)- मुगल शासकों द्वारा स्वयं को देवतुल्य मानना।

(ii)- देवता द्वारा भेजा गया शासक मनाना।

(iii)- जनता के मन में अपनी प्रतिष्ठा को स्थापित करना।

(iv)- प्रजा का रक्षक स्वयं को बताना।

उत्तर संख्या- 10

अलबरुनी

जन्म - 973 ई०
मृत्यु - 1048 ई०
स्थान - उज्बेकिस्तान में
प्रसिद्धि :- विभिन्न भाषाओं का ज्ञाता

सीरियाई, अरबी, संस्कृत तथा हिब्रू

पुस्तक का नाम:- किताब-उल-हिन्द

अध्याय:- 80 अध्याय

भाषा:- अरबी भाषा

अलबरुनी भारतीय वेदो का अध्ययन करने वाला प्रथम मुस्लिम व्यक्ति था।

अलबरुनी द्वारा जाति प्रथा का वर्णन:-

1- चार वर्ग:-

अलबरुनी बताता है कि जाति प्रथा केवल भारत मे ही नहीं थी वरन् सम्पूर्ण एशिया मे जाति प्रथा का अस्तित्व था।

(i)- पुरोहित तथा आनुष्ठानिक वर्ग
(ii)- शासक तथा घुड़सवार वर्ग
(iii)- चिकित्स, वकील, अध्यापक
(iv)- कृषक तथा शिल्पकार

2. भारत में जाति प्रथा:-

अलबरुनी भारत में जाति प्रथा का वर्णन करता है। उसके अनुसार समाज चार जातियो मे विभाजित था।

1- ब्राह्मण:- ब्रह्मा के मुख से उत्पत्ति
2- क्षत्रिय:- ब्रह्मा के हाथ से उत्पत्ति
3- वैश्य:- ब्रह्मा के जंघाओ से उत्पत्ति
4- शूद्र:- ब्रह्मा के पैरो से उत्पत्ति

कार्य

ब्राह्मण :- अध्ययन, अध्यापन, यज्ञ करना, करवाना
क्षत्रिय :- रक्षा करना
वैश्य :- व्यापार करना, कृषि करना
शूद्र :- तीनो वर्णो की सेवा करना।

3. अपवित्रता की मान्यता को अस्वीकार

अलबरूनी भारत में अपवित्रता की मान्यता को अस्वीकार करता है। उसके अनुसार "प्रत्येक अपवित्र वस्तु अपनी खोई हुई पवित्रता को पुनः पाने का प्रयास करती है। सूर्य हवा को स्वच्छ करता है। नमक समुद्र में पानी को गन्दा होने से बचाता है।"

1. निष्कर्ष :-

अलबरूनी का भारत के प्रति दृष्टिकोण पूर्णरूप से धार्मिक ग्रन्थो पर आधारित था।

क्योंकि शूद्र को जीवन निर्वहन के अन्य कार्य करने की स्वतन्त्रता थी। इसके अतिरिक्त बहुत सी जातियां वर्ण व्यवस्था में सम्मिलित नही थी।

उत्तर संख्या - 11

सूफी:- खलीफा तथा खिलाफत की बढ़ती निरंकुशता के विरुद्ध कुछ आध्यात्मिक व्यक्तियों का ध्यान रहस्यवाद की ओर गया। ये सूफी कहलाए।

सूफी का अर्थ:- सूफी शब्द अरबी भाषा के सूफ से निकला है। जिसका अर्थ है। गर्म कपड़े पहनने वाला।

सूफी

- बे शरिया
- बा शरिया

शरिया:- इस्लाम को दिशा निर्देशित करने वाला विधि ग्रन्थ। यह हदीस पर आधारित है। इसमें कानूनों का समावेश किया गया है।

एकरूपता:-

(i)- बे शरिया तथा बा-शरिया परम्परा सूफी परम्परा ही है।

(ii)- दो ही इस्लाम को मानने वाले है।

(iii)- दोनों ने समाज को नई दिशा दी है।

(iv) - दोनों ही मानवतावादी प्रवृत्ति के है।

(v) - दोनों हिंदू मुस्लिम एकता के समर्थक।

अन्तर! -

(i) - बे शरिया! - वे सूफी जो शरिया के नियमो को नहीं मानते थे।

बा-शरिया - वे सूफी सन्त जो शरिया के नियमो मे पूर्ण विश्वास रखते थे।

(ii) - बे शरिया सूफी उग्रवादी थे जबकि बा शरिया सूफी उदारवादी प्रवृत्ति के थे।

(iii) - बे शरिया जहाँ समाज मे तीव्र परिवर्तन लाने के इच्छुक है वही बा शरिया धीमी गति से सुधार करने को श्रेष्ठ मानते है